भारतीय ज्ञान परम्परा

विकसित भारत की संकल्पना 2047

डॉ. प्रभात शुक्ल
डॉ. राहुल कुमार

भारतीय ज्ञान परम्परा

विकसित भारत की संकल्पना 2047

Indian Knowledge System

Concept of Developed India, 2047

सम्पादक

डॉ. प्रभात शुक्ल

डॉ. राहुल कुमार

अखण्ड

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस

दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस
एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.in

भारतीय ज्ञान परम्परा : विकसित भारत की संकल्पना 2047

Indian Knowledge System : Concept of Developed India, 2047
Edited by Dr. Prabhat Sukla, Dr. Rahul Kumar

आईएसबीएन : 978-81-19098-58-3
सर्वाधिकार : © सम्पादकगण
संस्करण : प्रथम, 2024, दिसंबर 20

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता

डॉ. शिव प्रताप सिंह

डॉ. अशोक कुमार
सहायक आचार्य, वनस्पति विज्ञान विभाग
स्कूल ऑफ साइंसेस, आईएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद (उ.प्र.)

डॉ. कृष्ण कुमार सिंह
सहायक आचार्य, कृषि विभाग
महर्षि मार्कंडेश्वर विश्वविद्यालय, मुलाना, अंबाला (हरियाणा)

सारांश : भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदलने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 शुरू की गई है, जो शिक्षार्थियों के समग्र विकास में उपयोगी होगी। यह ढांचा शिक्षा प्रणाली को विकसित करने के लिए एक विस्तृत योजना प्रदान करता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) एन.ई.पी. पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। आई.के.एस. में भारत की विविध और समृद्ध ज्ञान की विरासत शामिल है। एन.ई.पी. अन्तःविषय ज्ञान पर केन्द्रित है। आई.के.एस. में प्रागैतिहासिक से वर्तमान काल तक की समस्त जानकारी शामिल है। परंतु इसके पूर्ण विकास के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली को सही तरीके से उपलब्ध कराना और भारतीय ज्ञान प्रणाली को वर्तमान के लिए प्रासंगिक बनाना आवश्यक है। एन.ई.पी. के साथ आई.के.एस. का एकीकरण, समृद्ध और विविध स्वदेशी ज्ञान के विकास और समझ को पुनर्जीवित करेगा।

प्रस्तावनाः–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) के उल्लेख की उत्साह के साथ शुरुआत हुई, जहाँ स्कूलों, कॉलेजों और उच्च शिक्षा संस्थानों में आई.के.एस. को अध्ययन के विषय के रूप में अनिवार्य किया गया। यह आधारभूत संरचना शिक्षा प्रणाली के विकास के लिए एक व्यापक और एकीकृत रणनीति प्रदान करता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पाठ्यक्रम के महत्वपूर्ण पक्षों में से एक है। आई.के.एस. में भारत की विविध और समृद्ध विरासत, ज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, साहित्य, दर्शन, संस्कृति, चिकित्सा (आयुर्वेद) और योग जैसे विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों

का समाधान करने के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित समकालीन ज्ञान को एकीकृत कर सकता है। आई.के.एस. में पुरातन से लेकर वर्तमान अवधि तक का समस्त ज्ञान एवं परिसंपत्तियां निहित हैं। एन.ई.पी. 2020 स्वदेशी ज्ञान के प्रसार के लिए, भाषा, संसाधनों और प्रौद्योगिकी के निर्माण को बढ़ावा देता है। एन.ई.पी. के साथ आई.के.एस. के एकीकरण से अंतर्निहित समकालीन सामाजिक मुद्दों को समझने और इन मुद्दों पर आगे शोध करने में मदद मिलेगी। यह विभिन्न हितधारकों के बीच समृद्ध और विविध स्वदेशी ज्ञान के विकास और समझ को बढ़ावा देगा और आधुनिक प्रौद्योगिकी की मदद से पारम्परिक ज्ञान को पुनर्जीवित करेगा।

कार्यान्वयन की चुनौतियांः–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 की शुरुआत के बाद से, शैक्षणिक संस्थानों और प्रशासनिक क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) एवं इसके उपसमूहों पर कई सेमिनार, सम्मेलन, चर्चाएं आयोजित की गई हैं। इन विषयों को विशुद्ध रूप समझते समय कुछ बुनियादी प्रश्न मस्तिष्क में उठते हैं–

1. इसमें शामिल कितने लोग वास्तव में समझते हैं कि भारतीय ज्ञान प्रणाली का क्या अर्थ है?
2. भारतीय ज्ञान प्रणाली शुरू करने का उद्देश्य क्या है?
3. सबसे प्रभावी तरीके से भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) को प्रदान करने के लिए किस बुनियादी ढांचे अथवा पारिस्थितिकी तंत्र की आवश्यकता है?
4. इस आवश्यकता की विरुद्ध वर्तमान आधार रेखा क्या है और हम इस अंतर को कैसे पूरा कर सकते हैं?

भारतीय शिक्षा के एक महत्वपूर्ण तत्त्व के रूप में भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के "भारत और इसकी समृद्ध, विविध, प्राचीन और आधुनिक संस्कृति और ज्ञान प्रणालियों और परम्पराओं में एक जड़ और गौरव" के मौलिक सिद्धान्त में परिलक्षित होता है। यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना करता है जिसकी जड़ें भारतीय लोकाचार में निहित हों। इसके साधन के रूप में, एन.ई.पी. 'संस्कृत ज्ञान प्रणाली' (एसकेएस) की बात करती है, जो आई.के.एस. का एक प्रमुख उप–समूह है और आई.के.एस. स्वयं स्कूलों और उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रदान किया जा रहा है। हालांकि यह वास्तव में एक महान विचार है और सही दिशा में एक कदम है, लेकिन इसे हासिल करने से पहले बहुत सी चीजों को हल किया जाना बाकी है।

इसके मुख्य दो चरण हैं –

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली को सही तरीके से उपलब्ध कराना और
2. भारतीय ज्ञान प्रणाली को वर्तमान के लिए प्रासंगिक बनाना।

भारतीय ज्ञान प्रणाली को सही तरीके से उपलब्ध कराना:–

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) के अधिकांश ज्ञान संग्रह की रचना और प्रलेखन कई शताब्दियों पहले संस्कृत में और उसके बाद अन्य भारतीय भाषाओं में किया गया था। इन्हें पांडुलिपियों, शिलालेखों, मौखिक परम्पराओं और जीवित परम्पराओं के रूप में संरक्षित किया गया था। जबकि आज बहुत सारे आई.के.एस. संग्रह, प्रिंट में उपलब्ध हैं। अभी भी आई.के.एस. का एक बहुत बड़ा संग्रह मौजूद है जिसकी खोज की जानी बाकी है। यदि खोज की जाती है, तो अभी तक प्रलेखित किया जाना बाकी है, अगर प्रलेखित किया जाता है तो अभी तक ठीक से अनुवाद और व्याख्या किया जाना बाकी है। आई.के.एस. का अनुवाद और व्याख्या करना कोई आसान काम नहीं है, क्योंकि जब इनकी रचना और प्रलेखन किया गया था, तब वैश्विक और भारतीय संदर्भ बहुत अलग थे, समाज बहुत अलग थे। पिछली कई शताब्दियों में, भारत असंख्य प्रभावों के अधीन रहा है जो एक तरह से आज के भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक ताने–बाने में परिलक्षित होता है। इसलिए जिस संदर्भ में मूल पाठ लिखा गया था, उसे समझना तब तक एक बड़ी चुनौती बन जाता है जब तक कि समर्पित तरीके से ध्यान केन्द्रित न किया जाए। एसकेएस में अधिकांश मौलिक ग्रन्थ सूत्र के रूप में लिखे गए थे, जो हालांकि अपनी संक्षिप्तता के मामले में लंबे थे, लेकिन बाद के समय में इनकी गलत व्याख्या और गलत समझ विकसित न हो यह एक बड़ी चुनौती थी। इसके लिए सही भाषा का ज्ञान, सटीक व्याख्या कराने वाले अन्य पूरक ग्रन्थों की आवश्यकता थी। जिससे समकालीन दुनिया, इन सूत्रों में छिपे व्याख्यानों के पाठ को स्पष्ट रूप से समझ सके। इसलिए आई.के.एस. के मौलिक पाठ का उचित अध्ययन तब तक पूरा नहीं होता है जबतक इसे इसकी टिप्पणियों, पूरक ग्रन्थों के साथ नहीं देखा जाता है एवं जिनमें सभी का अनुवाद और व्याख्या करने की आवश्यकता है। वर्तमान में, उपयोग के लिए तैयार ऐसे 'पूर्ण भारतीय ज्ञान प्रणाली साहित्य' का संग्रह बहुत कम है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) को आज के लिए प्रासंगिक बनाना:–

यद्यपि पहले से उल्लेखित संपूर्ण आई.के.एस. साहित्य को उपलब्ध कराया गया हो, लेकिन आज के विद्यार्थियों को इसका अध्ययन क्यों करना चाहिए? इतिहास के रूप में या कुछ ऐसा जो उन्हें आज की दुनिया से निपटने में भी मदद करेगा? इस पर गम्भीरता से विचार करने की जरूरत है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, जिस संदर्भ में आई.के.एस. को लाया गया एवं आज हम जिस संदर्भ में रहते हैं, वह उससे बहुत अलग है। इसके अलावा, इन कुछ शताब्दियों में, पश्चिम में ज्ञान प्रणालियों में इस हद तक बहुत प्रगति हुई है कि आज हम संगठनों में जो कुछ भी अध्ययन करते हैं और अपनाते हैं, वह पश्चिमी अनुसन्धान के परिणामों से प्रेरित है। इस

परिदृश्य में, यह सामने लाना महत्वपूर्ण है कि आई.के.एस. का अध्ययन मौजूदा प्रणालियों को पूरक बनाने, बढ़ाने एवं उन्हे बदलने में कैसे फायदेमंद है? इस प्रासंगिकता को जाने बिना और पूरी तरह से समझे बिना आई.के.एस. का अध्ययन वास्तव में इच्छित उद्देश्य को प्राप्त किए बिना यांत्रिक और सतही होगा।

क्या किया जा सकता है?

- पांडुलिपियों की खोज, मौखिक और जीवित परम्पराओं का साक्षात्कार और दस्तावेजीकरण आदि सहित आई.के.एस. को पुनर्प्राप्त करने के कार्य मे तेजी लानी होगी।
- विशेषज्ञों के माध्यम से 'सही पूर्ण आई.के.एस. साहित्य' उपलब्ध कराने पर सक्रिय रूप से काम करना होगा, जो मौजूदा आई.के.एस. साहित्य की व्याख्या की सभी सम्भावनाओं को देखते हुए सही ढंग से अनुवाद और व्याख्या कर सकते हैं। इससे आई.के.एस. को पढ़ाने के लिए आवश्यक 'सही पाठ्यक्रम और पाठ्य–पुस्तकें' उपलब्ध होंगी।
- आज के लिए आई.के.एस. की प्रासंगिकता पर खुले तौर पर और सच्चाई से चर्चा और बहस कर सकने वाले अंतर– अनुशासनात्मक मंचों और दलों का गठन करना होगा और पाठ्य पुस्तकों में ऐसी चर्चाओं के परिणामों का दस्तावेजीकरण कर उनको उपलब्ध करना होगा।

निष्कर्षः–

भारत में आई.के.एस. को शामिल करने से हितधारकों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को जानने में मदद मिल सकती है और वे पर्यावरण की गहरी समझ विकसित कर सकते हैं। चूंकि आई.के.एस. मौन ज्ञान पर आधारित है, इसलिए यह छात्रों को जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा की चुनौतियों जैसी वास्तविक जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने और उनसे निस्तारण में मदद कर सकता है। लेकिन आई.के.एस. के इस समावेश में कुछ चुनौतियां हैं और समावेश से पहले इन चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता है। भारत सरकार ने एन.ई.पी. के तहत आई.के.एस. को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए एक कदम उठाया है। शिक्षकों के उचित प्रशिक्षण की त्वरित आवश्यकता है इसलिए कि उन्हें आई.के.एस. का उचित ज्ञान हो और वे इसे सार्थक तरीके से विद्यार्थियों को दे सकें। आई.के.एस. के बारे में उपलब्ध आंकड़ों को सूचना प्रौद्योगिकी की मदद से सुव्यवस्थित करने और हितधारकों की जरूरतों और क्षमता के अनुसार उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। स्वदेशी ज्ञान प्रणाली हजारों वर्षों में भारत में विकसित हुई है इसलिए इसे कुछ ही दिनों में उपलब्ध करा पाना सम्भव नहीं है। समय के साथ इसे धीरे–धीरे उपलब्ध कराया जाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. Agrawal, D. (2000). Indigenous knowledge systems and the innovations in agriculture: Contextualizing knowledge, technology, and ethics. Agriculture and Human Values, 17(2): 213-227.
2. Chandel N. and K. K. Prashar (2024). Indian Knowledge System and NEP: A Brief Analysis. *International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research*, 11(1): 260-263.
3. Coleman, M. A. (2010). The impact of negative acculturation on cultural dominance in a multiple acquisition (Doctoral dissertation, University of St. Thomas (Saint Paul, Minn.)
4. Ghosh, A. (2015). Traditional Knowledge: Problems and Prospects. *Lokodarpan - A Peer-Reviewed Bilingual Annual Research Journal*, 5: 553-562.
5. Indian knowledge systems (IKS) 2020: Challenges of implementing it in classrooms.https://www.education.gov.in/nep/indian-knowledge-systems
6. Mahadevan, B., BHAT, V. R. and N. Pavana (2022). Introduction to Indian knowledge system: concepts and applications. *PHI Learning Pvt. Ltd. Delhi.*
7. National Education Policy 2020. January 3, 2024. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
8. Sharma, A., & Joshi, A. (2018). Impact of Globalization on Education in India: Towards Global Standards or Cultural Imperialism? *The Globalization Conundrum—Dark Clouds Behind the Silver Lining,* 257–265.

भारतीय ज्ञान परम्परा

विकसित भारत की संकल्पना 2047

डॉ. प्रभात शुक्ल • डॉ. राहुल कुमार

डॉ. प्रभात शुक्ल एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् हैं, आपने एम.कॉम., एम.एड, नेट (शिक्षा) और पीएच.डी. (शिक्षा) की उपाधि प्राप्त की हैं। डॉ. शुक्ल वर्तमान में शिक्षक शिक्षा विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं और आपके पास 24 वर्षों का शिक्षण तथा 14 वर्षों का शोध अनुभव है। डॉ. शुक्ल ने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है, आपने यूजीसी द्वारा अनुमोदित एक वृहद शोध परियोजना को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया है, 13 शोधार्थियों को पी–एच.डी. उपाधि हेतु मार्गदर्शन किया है तथा 4 शोधार्थी वर्तमान में शोध कार्य कर रहे हैं। आपने 16 शोध पत्र, 8 पुस्तकें और 3 पुस्तक अध्याय प्रकाशित किए हैं। आपने 32 सेमिनारों/कार्यशालाओं में प्रतिमागिता की तथा 4 सेमिनारों/कार्यशालाओं का सफल आयोजन किया है। इसके अलावा, आप वर्ष 2006 से इग्नू अध्ययन केंद्र, एस.एस. कॉलेज, शाहजहाँपुर के समन्वयक के रूप में भी कार्यरत हैं।

डॉ. राहुल कुमार ने एम.ए. (अंग्रेजी, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र), एम.एड., नेट (शिक्षा) और पीएच.डी. (शिक्षा) की उपाधि प्राप्त की है। डॉ. राहुल कुमार वर्तमान में शिक्षक शिक्षा विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। आपके पास 8 वर्षों का शिक्षण अनुभव है। आपके निर्देशन में 20 से अधिक छात्रों ने लघु शोध प्रबन्ध पूर्ण किये हैं। आपके 10 शोध पत्र, 7 पुस्तकें और 8 पुस्तक अध्याय प्रकाशित हैं। आपने 20 से अधिक सेमिनार/कार्यशालाओं में प्रतिभाग किया है।

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस
www.akhandbooks.in

ISBN 978-81-19098-58-3
9788119098583
₹1200 | $54